श्रम विभाग

ग्रादेश

दिनांक 13 श्रेप्रैल, 1987

सं० स्रो० वि०/रोहतक/56-87/15041.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० इस्टर्न लेब्रोट्रीज प्रा० लिं०, एम. ग्राई. ई, बहादुरगढ़ (रोहतक) के श्रमिक श्री राजेन्द्र सिंह, मीफत प्रधान, एच. एन. जी. मजदूर यूनियन, वहादुरगढ़, (रोहतक) तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

भ्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिणय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं।

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्टिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठसूचना सं० 9641-1-श्रम-73/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रिष्ठिनियम की धारा 7 के श्रिष्ठीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित है :---

क्या श्री राजेन्द्र सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 21 अप्रैल, 1987

सं. श्रो. वि./रोह/66-87/15914.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० एलाईड पोल इण्डिया लि०, एम. ग्राई. ई., वहादुरगढ़ (रोहतक), के श्रमिक श्री तिलोक विश्वकर्मा मार्फत श्री श्रार. एस. दिह्या, लेबर यूनियन, इन्टक, बहादुरगढ़ (रोहतक), तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीशोगिक विवाद श्रीधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 9641—1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी श्रीधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला व्यायिन्य एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उद्दर्श दुवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है :—

क्या श्री व्रिलोक विश्वकर्मा की <mark>सेवाग्रों का समा</mark>पन न्यायोचित तथा टीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. थ्रो. वि/ रोह/67-87/15921---चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० एलाईड पोल इण्डिया, लि०, एम. ग्राई. ई., बहादुरगढ़ (रोहतक), के श्रमिक श्री लक्षन घारी, मार्फत श्री ग्रार. एस. दिह्या, लेबर यूनियन, इन्टक ग्राफिस रोहतकारोड़, बहादुरगढ़ तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई ग्रीचोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हिरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रीधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी श्रीधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच था तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित है :—

> क्या श्री लक्षन धारी की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राइत का हकदार है ?

सं. म्रो. वि. रोहाक/65-87/15928---बूंकि हैरियाणा के राज्यपाल की राथ है कि मैं०एलाईड पोल इण्डिया, लि०, एम. म्राई. ई., बहादुरगढ़ (रोहतक), के श्रमिक श्री हंस राज विश्वकर्मा, मार्फत श्री म्रार. एस. दिह्या, लेबर यूनियन, इन्टक म्राफिस बहादुरगढ़ (रोहतक) तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई म्रोद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिनणेय हेतु निर्विष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिवित्यम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रीधिनियम सं 9641—1—श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी श्रीधमूचना की घारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीच मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित है :—

क्याश्री हंस राज की सेवामों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० भ्रो० वि०/सोनी /60-87/15935.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राम है कि मैं० भ्रमृतसर श्रायल मिल लि०, इन्डिस्ट्रियल ऐरिया, सोनीपत, के श्रमिक श्री जय भगवान, पृत्न श्री सूरजभान, मार्फत श्री रामस्वरूप लाकड़ा, महा सचिव, इन्टिक श्राफिस सोनीपत तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ं ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिनर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा अदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641—1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादगस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है:—

क्या श्री जयभगवान की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० त्रो० वि०/हिसार/13-87/15942.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० भारत ब्रास्ट्रेलियन पशु प्रजनन परियोजना क्षेत्र नं० 3, हिसार, के श्रमिक श्री जिले सिंह, पुत्र श्री दीवान, गांव व डा० तलवण्डी राणा, तहसील व जिला हिसार, तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ब्रीद्योगिक विवाद है ;

ग्नीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, ग्रौटोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 9641-1-श्रम/78/32537, दिनांक 6 नदम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत गा उस से सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेत् निर्दिष्ट करते हैं जो कि 'उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच गा तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित है :--

क्या श्री जिले सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहर का हकदार है ?